दुख है ढलते सूरज जैसा, शाम ढले ढाल जाए दुख सुख दोनो कुच्छ पल के, कब आए कब जाए

दुख है ढलते सूरज जैसा, शाम ढले ढाल जाए
दुख सुख दोनो कुच्छ पल के, कब आए कब जाए
दुख है ढलते सूरज जैसा, शाम ढले ढाल जाएदुख तो हर प्राणी को होवय,
राम ने भी दुख झेला
धैर्या प्रेम से वन में रहे, प्रभु चौदह बर्ष की बेला गर्मी में नादिया है खाली,
सावन में जल आअए
दुख है ढलते सूरज जैसा, शाम ढले ढाल जाए
ओ शाम ढले ढाल जाएदुख सुख दोनो कुच्छ पल के, कब आए कब जाए
दुख है ढलते सूरज जैसा, शाम ढले ढाल जाए
ओ शाम ढले ढाल जाए प्रभु का सुमिरन जिसने करके, हर संकट को खेला
असली जीवन उसका समझो, ये जीवन का मेलारात आंधरेई भोर में सूरज,
एसा फिर कल आए
दुख है ढलते सूरज जैसा, शाम ढले ढाल जाए
ओ शाम ढले ढाल जाएदुख सुख दोनो कुच्छ पल के, कब आए कब जाए
दुख है ढलते सूरज जैसा, शाम ढले ढाल जाएआए परीक्षा दुख के क्षद में, मॅन
तोरा घबराए
सह सह के दुख सहा ना जाए, आँखिया भर भर आए
राम का सुमिरन नारायण कर, बजरंगी बाल आअएदुख सुख दोनो कुच्छ पल

के, कब आए कब जाए
दुख है ढलते सूरज जैसा, शाम ढले ढाल जाए
ओ शाम ढले ढाल जाए, शाम ढले ढाल जाएदुख सुख दोनो कुच्छ पल के,
कब आए कब जाए
दुख है ढलते सूरज जैसा, शाम ढले ढाल जाए
दुख सुख दोनो कुच्छ पल के, कब आए कब जाए
दुख है ढलते सूरज जैसा, शाम ढले ढाल जाए

Source: https://www.bharattemples.com/dukh-hai-dhalate-sooraj-jaisa/

Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw